

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 6, चर्च में एकता, कुलुस्सियों 3

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह सत्र 6 है, चर्च में एकता, कुलुस्सियों 3।

जेल पत्रों पर बाइबिल अध्ययन व्याख्यान में आपका स्वागत है।

अब तक, हम जेल पत्रों के मूल परिचय को देख रहे थे, और पिछले व्याख्यानों के साथ, हमने अध्याय एक को कवर किया और हमने अध्याय एक के बारे में कुछ मुख्य बातें, अभिवादन, प्रार्थनाओं और धन्यवाद को देखा, और हमने उस अध्याय के कुछ प्रमुख घटकों को देखने के लिए इसे संक्षिप्त किया। अध्याय दो में, हम अध्याय दो के पहले भाग और अध्याय एक के अंतिम भाग के बीच के संबंध को देखना शुरू करते हैं। और वहाँ, मैंने आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि अध्याय दो, श्लोक एक से पाँच, अध्याय एक के अंत के साथ पढ़े जा सकते हैं।

और इसलिए, जब आप कुलुस्सियों पर एक टिप्पणी उठाते हैं, तो आप वास्तव में देख सकते हैं कि टिप्पणीकार इस बात पर बहुत समय व्यतीत करेंगे कि अध्याय दो, आयत एक से पाँच, अध्याय एक के अंत में क्यों हैं, ताकि वे एक पैराग्राफ बन जाएं। जैसा कि हमने इस पर चर्चा की, मैंने आपको यह भी बताया कि हम इसे एक अलग पैराग्राफ में देख सकते हैं। यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम देखते हैं कि पौलुस अपनी सेवकाई और अपनी सेवकाई के सार या महत्व पर ध्यान केंद्रित करता है।

हम आगे बढ़ गए, और मैंने जो कहा, उसे मैं कुलुस्सियों में चल रही बातों का स्पष्ट कथन मानता हूँ। मैंने इसे मामले का सार कहा। शायद यह मेरा शब्द भी नहीं है। मुझे लगता है कि डगलस मू वह व्यक्ति था जिसने पहली बार इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया था, अगर मुझे सही से याद है।

इस मामले का सार यह है कि हम कुलुस्सियों के अध्याय दो, आयत छह से सात में देखते हैं, और पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है कि तुमने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण कर लिया है, इसलिए उसी में चलते रहो। उसी में जड़ पकड़ो, स्थापित हो जाओ, और उसी में स्थापित हो जाओ। और फिर वह आगे कहता है कि जैसा तुम्हें सिखाया गया था।

फिर, हम आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि यह आधार झूठी शिक्षाओं और चर्च में होने वाली गतिविधियों से कैसे संबंधित है। इसलिए, हमने पिछले व्याख्यानों में से एक में इस पर कुछ समय बिताया। इस व्याख्यान से पहले, हमने अध्याय तीन को देखना शुरू किया, और हमने देखा कि कैसे मसीह में उनके विश्वासों और उनके आधारों का आधार स्थापित करना स्वाभाविक रूप से

उस चीज़ की ओर ले गया जिसे हम अनिवार्य कहते हैं, जहाँ उन्हें कुछ विशिष्ट चीज़ें करने के लिए कहा गया है ताकि वे जो कुछ भी बताया या सिखाया गया है, उसे जी सकें।

मैंने वास्तव में आपका ध्यान कुछ दिलचस्प विरोधाभासी पैटर्न की ओर आकर्षित करके शुरू किया है, जिन्हें आपको धारण करना चाहिए या शायद टोपी की तरह पहनना चाहिए, जैसे कि आप तीनों तक पहुँचने लगते हैं, जैसे कि स्वर्गीय और सांसारिक विरोधाभास। मृत्यु को प्राप्त करने और जीवित करने का आह्वान। पुराने और नए के बीच का अंतर।

आपको शायद याद होगा कि मैंने कुछ दिलचस्प तस्वीरों के ज़रिए आपका ध्यान कैसे खींचा था, जिसमें आपके पास एक कंकाल और एक छोटा बच्चा है। आपके पास एक बूढ़ा आदमी और एक छोटा बच्चा है। मैंने वास्तव में आपका ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि किन चीज़ों को मारना और उतारना ज़रूरी है और इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि कुछ चीज़ें जो त्यागी जानी चाहिए वे यौन प्रकृति की हैं, और जो चीज़ें उतारनी हैं वे क्रोध का अर्थ लेती हैं।

इसके तुरंत बाद, मैंने आपको यह भी याद दिलाया कि इस चर्च में, इस आस्था के समुदाय में, जब आप उन लोगों को मारते या छीनते हैं जिन्हें मारने और छीनने की ज़रूरत है, तो जातीयता, नस्ल और सामाजिक संरचनात्मक मुद्दों पर आधारित भेदभाव का कोई कारण नहीं है। शायद यह आपके दिमाग में सीथियन के बारे में उभर कर आए। वह समाज जो शायद सबसे ज़्यादा या सबसे कम सम्मानित है, वह अपमानित और दलित है क्योंकि वे कहाँ से आते हैं और उनके सांस्कृतिक मानदंड जिनका दूसरे लोग सम्मान नहीं करते हैं।

हम नए स्व को देखने आते हैं और यह देखते हैं कि क्या धारण करने की आवश्यकता है, साथ ही यह तथ्य भी कि वे एक विशेष पहचान में निहित हैं। परिणामस्वरूप, पारस्परिक जिम्मेदारी का आह्वान होता है। आपको शायद वह चार्ट याद होगा जो मैंने आपके लिए स्क्रीन पर रखा था, जिस पर हमने पिछले व्याख्यान में चर्चा समाप्त की थी। इसलिए, जो लोग अलग-थलग हैं, जो लोग पवित्र हैं, जो लोग प्रिय हैं, उन्हें इस पारस्परिक जिम्मेदारी के लिए बुलाया जाता है कि वे वहाँ रहें, खोज करें, प्रेम को प्रबल करें, मसीह की शांति को अपने दिलों में राज करने दें, और प्राचीन दुनिया में एक महत्वपूर्ण गुण विकसित करें जिसके बारे में हम अब गुण के रूप में बात नहीं करते हैं, कृतज्ञता का गुण और स्पष्ट रूप से मसीह के वचन को अपने अंदर बसने देने का आह्वान।

यहाँ से हमें पद 17 की याद आती है। तो, आइए हम जल्दी से पद 16 से 17 पर नज़र डालें। मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने अपने मन में धन्यवाद के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।

और जो कुछ भी तुम वचन या कर्म से करो, सब कुछ प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो। इसलिए यहाँ हम पाते हैं कि पौलुस कलीसिया को एक दूसरे को सिखाने और समझाने, तथा परस्पर सहयोग का अनुसरण करने की सलाह दे रहा है। हमें एक दूसरे की ज़रूरत है, लेकिन यहाँ, वह जो माँग रहा है वह बहुत दिलचस्प है।

उन्होंने यह नहीं कहा कि झूठे शिक्षकों द्वारा पूरे चर्च को प्रभावित करने के बजाय, हमें कुछ महान शिक्षकों को लाना चाहिए, देश के महान शिक्षकों को एक साथ बुलाना चाहिए, और बैठकर उनसे हमें शिक्षा दिलवानी चाहिए। नहीं, उनका सुझाव है कि समुदाय के सदस्य एक दूसरे को शिक्षा दे सकते हैं। यहाँ चेतावनी शब्द का अर्थ है, वे एक दूसरे को प्रोत्साहित भी कर सकते हैं।

और उन्हें यह पूरी समझदारी से करना चाहिए। दिलचस्प बात यह है कि डांटने वाले हिस्से के संदर्भ में, वह कहते हैं कि वे गायन में ऐसा कर सकते हैं। खैर, अगर आप मेरी तरह गायन में अच्छे नहीं हैं तो आप ऐसा करने की कोशिश नहीं करना चाहेंगे।

जब मैं गाना शुरू करता हूँ, तो शायद ऐसा लगता है जैसे मेंढकों का झुंड गाना गा रहा हो, और कभी-कभी लय और बाकी सब कुछ सही लगता है। मैं गाता नहीं हूँ, इसलिए मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जिन्हें गाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। लेकिन पॉल कहते हैं कि गायन में भी, आप समुदाय को मजबूत करने और चर्च में आपसी सहयोग की भावना को मजबूत करने के लिए एक-दूसरे को समझा सकते हैं।

उन्होंने उनसे यह सब कृतज्ञता के साथ करने के लिए भी कहा। यहीं पर आप देखते हैं कि पॉल वास्तव में एक ऐसी चीज पर पहुंच जाता है जिसके बारे में हम आम तौर पर चर्च में बहुत बात नहीं करते हैं, और हम इसके बारे में बात करना भी पसंद नहीं करते हैं क्योंकि इससे ऐसा लगता है कि इसमें हर किसी की भूमिका है, और सच कहा जाए तो हममें से कुछ लोग चर्च में बहुत कुछ नहीं करना चाहते हैं। लेकिन पॉल का कहना है कि झूठे शिक्षकों के प्रभाव के खिलाफ एक फ़ायरवॉल बनाने या झूठे शिक्षकों के प्रभाव को कम करने या बाहर निकालने में सक्षम होने के लिए, हमें इस पारस्परिक समर्थन, शिक्षा और एक-दूसरे को चेतावनी देने की आवश्यकता है।

और फिर श्लोक 17 वह है जिसे मैं महान चुनौती कहता हूँ। यह एक महान चुनौती है, और यह इस प्रकार है। और जो कुछ भी आप शब्दों में करते हैं, इसलिए जो कुछ भी आप भाषण या कर्म के संदर्भ में करते हैं, सब कुछ प्रभु के नाम पर करें।

आप उसके द्वारा परमेश्वर पिता को धन्यवाद दे रहे हैं। आप जो भी वचन में करते हैं, उसे जान लें कि आप उसे प्रभु के नाम पर कर रहे हैं। अपने भाषण के संदर्भ में, जान लें कि लोग आपके भाषण को ऐसे देख रहे हैं जैसे कोई व्यक्ति प्रभु यीशु के नाम पर व्यापार करता है।

अपने आचरण में, याद रखें कि उसने हमें कपड़े उतारने और कुछ पहनने के लिए कहा था? वह वास्तव में हमें याद दिला रहा है कि आप जो कुछ भी करते हैं उसे भगवान के नाम पर किया जाना चाहिए। आइए रुकें - शब्द नाम।

यहाँ नाम शब्द का अर्थ सिर्फ़ बैज नहीं है। ग्रीक अर्थ में नाम शब्द का अर्थ प्रतिष्ठा या लाइसेंस हो सकता है। इसलिए, हम यह सब प्रभु के नाम पर कर रहे हैं, प्रभु की प्रतिष्ठा को धारण कर रहे हैं।

दूसरे शब्दों में, जब हमारी बातचीत मसीह के कामों या कथनों से बहुत दूर चली जाती है, तो हम वास्तव में उसके लिए एक बुरी प्रतिष्ठा अर्जित कर रहे होते हैं। जब हमारा आचरण मसीह के नाम

का उपहास करता है, तो वास्तव में हम यह प्रभु के नाम पर नहीं कर रहे होते हैं। पौलुस कहता है, चाहे बोलें या काम, तुम्हें यह प्रभु के नाम पर करना चाहिए।

अब, हम अध्याय 3 के अंत में आ गए हैं, अध्याय 3 का अंतिम पैराग्राफ, पारिवारिक मुद्दों पर बात करना शुरू करता है। आधुनिक परिवारों के विपरीत, प्राचीन परिवार की कल्पना इस तरह करें। एक पति और पत्नी की कल्पना करें।

और इतने सारे बच्चों की कल्पना करें। साथ ही, गुलामों की कल्पना करें। लेकिन मैं एक मिनट के लिए बच्चों के बारे में बात करना चाहता हूँ।

बच्चे वे हो सकते हैं, जिनमें पुरुष की पिछली शादी से हुए बच्चे शामिल हैं, या वे बच्चे भी हो सकते हैं जो घर में पत्नी के रूप में रहने वाली महिला के साथ पैदा हुए हों। दास। हम जानते हैं कि प्राचीन दुनिया में दास प्रथा बहुत आम थी।

वैसे, क्या मैं आपसे वास्तव में गुलामी के इस विषय से इतना चिढ़ने या परेशान होने के लिए नहीं कह सकता, क्योंकि प्राचीन दुनिया में, गुलामी समाज का हिस्सा थी। यह हर जगह और हर जगह थी, और यह गुलामी की अवधारणा के समान नहीं थी जिसे बाद में अंतिम अटलांटिक दास व्यापार में जाना जाएगा। इसलिए, हमें अफ्रीकी अमेरिकियों के इतिहास या अफ्रीका से दुनिया के बाकी हिस्सों में गुलामी के इतिहास पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए।

अभी वहाँ मत जाओ। इस चर्चा के दौरान गुलामी के विचार पर ही टिके रहो, और मैं तुम्हारे लिए कुछ बातें स्पष्ट करूँगा। तो, चलो पौलुस की चेतावनी पर नज़र डालना शुरू करते हैं।

यह एक ऐसा चर्च है, जिसे शुरू में ही उसने बताया था कि परमेश्वर उनका पिता है, वे चर्च में भाई-बहन हैं, और यीशु परमेश्वर का पुत्र और उनका सह-भाई भी है। इसलिए, वे परिवार में हैं। अब, एक चर्च जो, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, लोगों के घरों में मिलता है, अब उसे यह सुनिश्चित करने के लिए चेतावनी दी जाएगी कि उनके घरों में जीवन ईसाई आचरण के अनुसार जिया जाए, जिसे उसने पद 17 में बताया है, कि वे जो कुछ भी करें या कहें, उसे प्रभु के नाम पर करें।

आइए देखें कि वह क्या कहना चाहता है। खैर, हम पहले महिलाओं के बारे में कहना पसंद करते हैं, है न? तो, पॉल ने उसकी बात सुनी। तो, वह महिलाओं से शुरू करता है।

तो, वह पत्नियों से शुरू करता है, ग्रीक में, पत्नियाँ। फिर वह उस शब्द से आगे बढ़ता है जिसे बहुत सी महिलाएँ सुनना पसंद नहीं करतीं, एस शब्द, प्रस्तुत करना। महिलाएँ, प्रस्तुत करें।

और मुझे लगता है कि अगर आप आज पति हैं और आप श्लोक 8 की पहली पंक्ति पढ़ते हैं और कहते हैं, यह कुलुस्सियों 3 श्लोक 18 में पॉल का शब्द है, कि पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहें, तो आपको वास्तव में वैसा ही चित्र मिलेगा जैसा मैंने आपके लिए स्क्रीन पर दिखाया है। आप अपनी पत्नी को खुश नहीं कर पाएंगे, अगर आप यह नहीं समझते कि चित्र में क्या चल रहा है। क्योंकि मैं आज ऐसी बहुत सी महिलाओं को नहीं जानता जो अधीनता शब्द सुनना चाहती हों।

अचानक, छात्रों ने मुझे याद दिलाया कि कक्षा दर कक्षा, हमें यह शब्द पसंद नहीं है। और मैं कहना चाहता हूँ, यह दिलचस्प है कि हमें कुछ शब्दों से एलर्जी है। लेकिन आइए उस शब्द को थोड़ा और करीब से देखें।

यूनानी भाषा में यह शब्द एक ऐसी रचना में है जो अंग्रेजी में नहीं है। पौलुस द्वारा आज्ञाकारिता के लिए पुकारे जाने का अर्थ यह नहीं है कि कोई स्त्री पर आज्ञाकारिता थोप रहा है। बल्कि वह वास्तव में पत्नी को पुकार रहा है, और इस शब्द का अनुवाद स्त्री भी हो सकता है।

तो, वैसे, अगर आपके पास बाइबल है जिसमें महिला या पत्नियाँ लिखा है, तो ग्रीक शब्द का अनुवाद महिला भी हो सकता है। और यह कहता है, अगर आप पत्नी या महिला का अनुवाद करते हैं, तो, देवियों, आपके पास वैसे भी कोई विकल्प नहीं है। आप जहाँ भी जाएँ, यह वहाँ है, यह एक महिला है, यह स्त्रीलिंग है।

इसलिए, औरत, स्वेच्छा से अपने पति के अधीन रहो। ऐसा नहीं है कि तुम्हारा पति तुम्हें बुला रहा है, तुम पर दबाव डाल रहा है, तुम्हें अधीन होने के लिए परेशान कर रहा है। लेकिन एक ईसाई के रूप में जिसके शब्द और कर्म प्रभु के नाम पर होने चाहिए, स्वेच्छा से अपने पति के अधीन रहो।

क्या इससे मदद मिली? कुछ लोग कहेंगे कि इससे उन्हें मदद मिली। जब तक वह यह नहीं कहेगा, मैं प्रस्तुत करना चाहता था। शायद इससे मदद मिलेगी। लेकिन अपने घर में एक चर्च की कल्पना करें।

और वे वहाँ संगति के लिए आते हैं। पति-पत्नी हर समय लड़ते रहते हैं। बच्चे घर में तरह-तरह के उत्पात मचाते रहते हैं।

यह निश्चित रूप से वह उदाहरण या प्रतिष्ठा नहीं लाएगा जो हम मसीह के नाम पर पाना चाहते हैं। इसलिए, पत्नियों, यह बाइबल में लिखा है। समर्पण करें।

लेकिन अपने पति को याद दिलाइए कि बाइबल उन्हें यह याद दिलाने के लिए नहीं कहती कि आपको अधीनता स्वीकार करनी चाहिए। लेकिन बाइबल कुलुस्से में पौलुस के श्रोताओं से कहती है कि वे स्वेच्छा से अपने पति के अधीन रहें। ऐसा करना सही बात है।

वैसे, मैं समझाऊँगा कि पति के प्रति यह समर्पण और निर्देश कुलुस्सियों और बाद में इफिसियों में कैसे लागू होता है। और इफिसियों में, आप वास्तव में इसे देख सकते हैं और वापस बैठ सकते हैं और कह सकते हैं, वाह, अगर इसका यही मतलब है, तो शायद मुझे इसके बारे में चिंतामुक्त होना चाहिए। या शायद आप कहेंगे, ठीक है, यह एक आदमी बोल रहा है।

वह सोचता है कि यह महिला के लिए आसान होना चाहिए। पॉल कहता है कि महिलाओं को स्वेच्छा से अधीन होना चाहिए क्योंकि यह प्रभु के लिए उचित है। वास्तव में, उनके अधीन होने का आधार उन लोगों के लिए एक सहमत आचार संहिता है जो प्रभु में हैं।

और इसलिए वह कह सकता है, अगर तुम उस तरीके से समर्पण करोगी, तो तुम जान जाओगी कि किस तरह का समर्पण भगवान के लिए उचित है। अपने पुरुष बेटे के लिए नहीं, किसी ऐसे पुरुष के लिए नहीं जो तुम्हें दबाने की कोशिश कर रहा है, अपने पति के लिए नहीं जो तुम्हें तंग करने की कोशिश कर रहा है, बल्कि भगवान के लिए उचित है। समर्पण का मूल कोई शक्ति का खेल नहीं है।

वास्तव में, इस भाषा की प्रकृति हृदय की प्रवृत्ति है। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जो कहती है कि मैं किसी प्रकार के अधिकार के अधीन रहने के लिए उत्सुक हूँ। मैं ऐसे ढांचे में काम करने के लिए उत्सुक हूँ जहाँ मैं जरूरी नहीं कि शो को नियंत्रित कर रहा हूँ।

हां, आप इसमें शक्ति को पढ़ सकते हैं, लेकिन यह शक्ति संबंध से कहीं अधिक एक संबंधपरक गतिशीलता है। और जब आप ऐसा करते हैं, तो याद रखें कि मानदंड यह है कि इसे भगवान के अनुरूप किया जाए। पति के लिए, फूल तब तक पर्याप्त नहीं होते जब तक कि सच्चा प्यार वह ढांचा न हो जिसके भीतर फूल दिए जाते हैं।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मैं घाना में पला-बढ़ा हूँ, जहाँ महिलाओं के लिए फूल खरीदना उस संस्कृति का हिस्सा नहीं था जिसमें मैं पला-बढ़ा हूँ। मैं अपनी पत्नी से मिला, जो एक अमेरिकी है, और जब हम डेटिंग कर रहे थे, तो मैं एक जिद्दी आदमी हुआ करता था। आप जानते हैं, मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि फूल महत्वपूर्ण होते हैं।

और मेरा एक दोस्त है जो मुझे बताएगा, डैन, तुम्हें पता है, फूल काम करते हैं। फूल खरीदो। मैंने कहा, नहीं, घर वापस, हम बस पीछे जाते हैं, और हम फूल काट सकते हैं।

हम इसे काट कर लोगों को दे सकते हैं अगर उन्हें यह पसंद है और लोग बहुत ज़्यादा परवाह नहीं करते हैं। फूल तभी मायने रखते हैं जब आप उन्हें लगाते हैं और वह सब करते हैं। जब मैंने उस समय अपनी गर्लफ्रेंड के लिए फूल खरीदना शुरू किया, जो अब मेरी पत्नी है, तो मुझे जल्द ही एहसास हुआ कि हालाँकि यह उसके लिए महत्वपूर्ण था, लेकिन यह ज़्यादा महत्वपूर्ण था कि वह जाने कि मैं उसे वैसे ही प्यार करता हूँ जैसी वह है और मैं उसके लिए हमेशा मौजूद रहूँगा।

इसका मतलब यह नहीं है कि उसे फूल पसंद नहीं थे। वह कभी-कभी मुझे याद दिलाती थी, खासकर जब हमारे घर मेहमान आते हैं और वे फूल लेकर आते हैं। लेकिन उसके लिए मेरा प्यार ज़्यादा महत्वपूर्ण था।

पॉल ने पत्नी को जो निर्देश दिया है, उसी तरह उसने पत्नियों को आज्ञाकारी रहने के लिए कहा है, उसी तरह पति को भी पत्नी से प्रेम करना चाहिए। और इसका आधार क्या है? वह कहता है, कठोर मत बनो। आइए पहले इसे पढ़ें।

पतियों, अपनी पत्नियों से प्यार करो और उनके साथ कठोर व्यवहार मत करो। क्योंकि तुम घर के मुखिया हो सकते हो, लेकिन सावधान रहो कि तुम अपनी पत्नी के साथ व्यवहार करने के तरीके में संतुलित रवैया रखो। कल्पना करो कि एक पत्नी अपने पति के अधीन रहती है, एक पति इतना प्यार करता है कि वह कभी भी पत्नी से कठोर बात नहीं कहता।

वह पत्नी के साथ सम्मान और गरिमा के साथ पेश आएगा, उसे वह सारा प्यार दिखाएगा जिसकी उसे ज़रूरत है। मेरा मानना है कि एक पति जो इतना प्यार करने वाला है, वह पत्नी के लिए अधीनता स्वीकार करना आसान बना देगा। और एक पत्नी जो इतनी विनम्र है, वह पति के लिए प्यार स्वीकार करना आसान बना देगी।

फिर से, एकता के लिए आपसी जिम्मेदारी अब चर्च से हटकर इस भाग में आ गई है, जैसा कि हमने अध्याय 3 में पहले देखा था, जहाँ अब यह परिवार में सूक्ष्म स्तर पर है कि यह आपसी सहयोग कैसे मौजूद होगा। तो, अगर यह समझ में आता है, तो क्या आप इसे ज़ोर से पढ़ने में मेरे साथ शामिल होना चाहेंगे? पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो जैसा कि प्रभु में उचित है। पतियों, अपनी पत्नियों से प्यार करो, और उनके साथ कठोर मत बनो।

क्या अब यह समझ में आता है? क्या अब आपको एस-शब्द पसंद है? अरे, पतियों, क्या अब आप प्यार करने के लिए तैयार हैं और सिर्फ़ यह नहीं कह रहे हैं कि मैं सिर्फ़ रोमांटिक होने की कोशिश कर रहा हूँ? वैसे, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि समाज पति-पत्नी के बीच संबंधों को किस तरह से संभाल रहा था, ताकि आप वास्तव में समझ सकें कि पॉल यहाँ क्या कर रहे हैं। यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने यह कहा है। जोसेफस अपने अगेंस्ट एपियन में अपने तर्क के आधार के रूप में शास्त्रों को उद्धृत कर रहे हैं।

शास्त्रों के अनुसार, एक स्त्री अपने पति से हर मामले में कमतर होती है। इसलिए उसे अपने पति की आज्ञा माननी चाहिए। इसलिए नहीं कि वह उसका अपमान करे, बल्कि इसलिए कि वह अपने पति के प्रति अपने कर्तव्य को समझे।

क्योंकि परमेश्वर ने पति को अधिकार दिया है, इसलिये पति को चाहिए कि वह केवल अपनी पत्नी के साथ ही सोये, जिस से उसने विवाह किया हो। परन्तु किसी और की पत्नी से सम्बन्ध रखना बुरी बात है।

अगर कोई मौत के मुंह में जाता है, तो उसे अवश्य ही सजा मिलेगी। अब वह व्यक्ति भी इससे बच नहीं सकता जो किसी कुंवारी लड़की को किसी दूसरी महिला से विवाह करने के लिए मजबूर करता है या किसी दूसरे आदमी की पत्नी को बहकाता है। इसके अलावा, कानून हमें अपनी सभी संतानों का पालन-पोषण करने का आदेश देता है और महिलाओं को अपने गर्भ में पल रहे बच्चे का गर्भपात कराने या बाद में उसे नष्ट करने से मना करता है।

और अगर कोई महिला ऐसा करती हुई दिखती है, तो वह एक जीवित प्राणी को नष्ट करके और मानव जाति को कम करके एक बच्चे की हत्यारी होगी। इसलिए, अगर कोई इस तरह के व्यभिचार या हत्या में आगे बढ़ता है, तो उसे शुद्ध नहीं किया जा सकता। जोसेफस कठोर लगता है।

लेकिन आप जानते हैं, मैं अफ्रीकी संस्कृति के बारे में सोचता हूँ। कुछ महिलाएँ इससे खुश होंगी और हाँ कहेंगी! वह कहता है कि तुम किसी दूसरी महिला के लिए नहीं जा सकते। लेकिन मैं यहाँ जो बात आपको समझाने की कोशिश कर रहा हूँ, वह है स्वर पर ध्यान देना।

महिला हीन है। महिला को आज्ञाकारी होना चाहिए। पति की यही भूमिका है, बस उसे दूसरों से कैसे संबंध रखना है, इस पर प्रतिबंध है।

दूसरी ओर, पौलुस स्त्री से स्वेच्छा से अधीन रहने के लिए कहता है। पति दूसरों के संबंध में शक्ति या संयम नहीं दिखाता है, बल्कि वास्तव में प्रेम दिखाता है, जैसा कि हम इफिसियों में देखेंगे। ऐसा प्रेम जो कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम के अनुरूप है।

अगर आप अभी भी जानना चाहते हैं, तो यह एक यहूदी ढांचा है जिसे पॉल के समय के आसपास बनाया गया था। अगर आप यह भी जानना चाहते हैं कि उस समय के दार्शनिक इस रिश्ते और रिश्ते की गतिशीलता के बारे में कैसे सोचते थे, तो मैं आपको डेमोस्थनीज से मिली जानकारी के बारे में याद दिला दूँ। डेमोस्थनीज ओरेशन 59 में, वह लिखते हैं कि एक पत्नी के रूप में एक महिला के साथ रहने का यही मतलब है।

उससे बच्चे पैदा करना और बेटों को कुल के लोगों और औरतों से मिलवाना। और बेटियों को अपनी पत्नी के रूप में पतियों से ब्याह देना। रखैलें हम आनंद के लिए रखते हैं।

हमारे लोगों की रोज़मर्रा की देखभाल के लिए रखैलें। लेकिन पत्नियाँ वैध बच्चे पैदा करने और हमारे घरों की वफ़ादार संरक्षक होने के लिए। वाह, यह एक विशिष्ट ग्रीक शैली है।

आप पत्नी रख सकते हैं, और पत्नी की अनुमति से आप रखैल भी रख सकते हैं। आप घर में रहने के लिए रखैल भी ला सकते हैं। आप रखैल से बच्चा भी पैदा कर सकते हैं, और पत्नी को इस बारे में पता चल जाएगा, लेकिन उस रखैल का बच्चा नाजायज बच्चा होगा।

तो, पत्नी को खुश होना चाहिए कि वह एक पत्नी है। खैर, पॉल कहते हैं कि नहीं। वह इतना आगे नहीं जाएगा।

जैसा कि हम इफिसियों में देखेंगे, वह वास्तव में विवाह को केवल एक पुरुष, एक स्त्री तक सीमित कर देगा, और रिश्ते को केवल उसी तक सीमित कर देगा। वह कहेगा, पत्नियों, पतियों के अधीन रहो, अपनी पत्नी से प्रेम करो और कठोर मत बनो। कठोर मत बनो।

उसे आज्ञा मानने के लिए कहने में कठोरता न करें। और फिर वह बच्चों की ओर मुड़ेगा। आइए इस पर श्लोक 20 पर एक नज़र डालें।

बच्चों, पौलुस लिखता है, हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होता है। हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होता है। इसकी पृष्ठभूमि, शायद यह आपको प्राचीन भूमध्यसागरीय संस्कृति के बारे में कुछ बातें समझने में मदद करेगी।

पति को घर का मुखिया माना जाता है। पत्नी घर की मुख्य संचालन अधिकारी होती है। दूसरे शब्दों में, किसी भी घर में पति, पत्नी, बच्चे और दासों को मिलाकर लगभग 20 लोग हो सकते हैं।

पत्नी व्यवसाय के संचालन के मामलों को संभालने के लिए जिम्मेदार होती है। पति घर का मुखिया होता है। और बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

अब, अगर इतना ही काफी नहीं है, तो आपको संस्कृति के उस हिस्से को भी समझना चाहिए जिसे हम प्राचीन संस्कृति में सम्मान और शर्म की अलिखित संहिता कहते हैं। प्राचीन संस्कृति में, परिवार में, परिवार का सम्मान बहुत महत्वपूर्ण था। और इसलिए, परिवार के सदस्यों को खुद को इस तरह से संचालित करना पड़ता था जिससे परिवार का सम्मान बरकरार रहे या परिवार को और भी सम्मान मिले।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। अगर घर में युवा महिलाएँ हैं और कोई उनका यौन शोषण करता है, तो इससे परिवार का अपमान होता है और घर के पुरुषों पर महिलाओं की सुरक्षा न कर पाने का आरोप लगता है। अगर बच्चे अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे तो घर की इज्जत पर आंच आती है।

इसी ढाँचे में पॉल ने कहा कि बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए। लेकिन इसका एक हिस्सा यह है कि उनके पास कोई विकल्प नहीं है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ मसीह प्रभु है।

याद रखें, उन्हें उनकी आज्ञा माननी चाहिए क्योंकि यह प्रभु को पसंद है। और उन्हें हर बात में उनकी आज्ञा माननी चाहिए। फिर से, यह कुलुस्सियों में एक दिलचस्प शब्द परिवर्तन है।

अगर आप गौर करें, तो जब आज्ञाकारिता की बात होती है, तो आप कहते हैं कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करो। जब यह बात होती है कि बच्चों को किससे नाराज़ नहीं होना चाहिए, तो यह आमतौर पर उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो अनुशासन के लिए जिम्मेदार है, यानी पिता। पिता अनुशासन के लिए जिम्मेदार है।

अमेरिका में अब हम शारीरिक दंड के बारे में बात नहीं कर सकते हैं, बिना बच्चों, बच्चों और समाज कल्याण के लोगों के बारे में सोचे जो किसी के पीछे पड़ जाते हैं। आज की कुछ संस्कृतियों में भी जो इतनी विकसित नहीं हैं, वहाँ भी यह मौजूद है। अनुशासन सुनिश्चित करना पुरुष की जिम्मेदारी का एक हिस्सा है।

इसलिए, जब आप घर में कोई गलत व्यवहार करते हैं, और आप एक बच्चे हैं, तो माँ आपको यह कह सकती है, जब पिताजी आएंगे तो मैं उन्हें बता दूँगी। और आप माँ को रिश्त देने के लिए सब कुछ करना चाहेंगे ताकि वह पिताजी को न बताए क्योंकि पिताजी ही हैं जो आपको अनुशासित करने वाले हैं।

और पॉल इस पर बात करते हुए कहते हैं, पिताओ, अपने बच्चों को क्रोधित मत करो। क्योंकि वे निराश हो जाएँगे। मुझे उम्मीद है कि आप कुछ हद तक उस ढाँचे की सराहना करने लगे हैं जिसके भीतर पॉल यहाँ काम कर रहे हैं, जो ईसाई परिवार के लिए उपयुक्त है।

वह यह नहीं कह रहा है कि जब पत्नी आज्ञाकारी हो तो उसे प्रताड़ित किया जाए। वह यह नहीं कह रहा है कि पति अपनी पत्नी और अपने घर पर हुक्म चलाए जबकि वह अपनी पत्नी से प्यार करता है। जब वह बच्चों से आज्ञा मानने के लिए कहता है, तो वह वास्तव में बच्चों को किसी तरह के प्रतिबंधात्मक मोड में नहीं डालता है कि पिता बच्चों के साथ जो चाहे कर सके।

लेकिन वह पिता की पारंपरिक शक्तियों और नियंत्रण को सीमित करते हुए कहते हैं, इन बच्चों को क्रोधित मत करो। उन्हें हतोत्साहित मत करो। फिर आप घर के दूसरे लोगों के समूह के पास जाते हैं।

बच्चों को पता चल गया है कि उन्हें क्या करना है। अनुशासन के लिए ज़िम्मेदार पिता जानते हैं कि इन बच्चों को कैसे संभालना है। अब, पॉल दासों को संबोधित करने जा रहा है।

मैं जल्द ही आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करूँगा कि प्राचीन ग्रीको-रोमन दुनिया के औसत शहर में, पॉल के समय में, हमें बताया गया है कि जहाँ ज्यादातर लैटिन-भाषी या ग्रीक-भाषी हैं, वहाँ 30 से 30 प्रतिशत आबादी दासों की होगी। ज्यादातर घरों में दास होंगे। प्रारंभिक चर्च उस ढांचे के भीतर काम करेगा।

अतः, इस बात को पृष्ठभूमि मानकर, आइए हम पौलुस द्वारा पद 22 से दिए गए अगले निर्देश को पढ़ना शुरू करें। आप जो भी करें, उसे पूरे मन से करें, मानो आप प्रभु के लिए काम कर रहे हैं, न कि किसी मानव स्वामियों के लिए।

चूँकि आप जानते हैं कि आपको प्रभु से इनाम के रूप में विरासत मिलेगी, इसलिए आप प्रभु यीशु की सेवा कर रहे हैं। जो कोई भी गलत काम करता है, उसे उसके गलत कामों के लिए बदला दिया जाएगा, और कोई पक्षपात नहीं होगा।

और फिर वह स्वामियों की ओर मुड़ता है। स्वामियों, अपने दासों को वही प्रदान करो जो सही और उचित है क्योंकि तुम जानते हो कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है। मैं बस आपका ध्यान उस समय की गुलामी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ और इससे कुछ बिंदु बनाना चाहता हूँ।

बॉब ने 1 तीमुथियुस पर अपनी टिप्पणी में यह कहा है। प्राचीन दासता एक विविध घटना थी। निजी दासों को बहुत दुख में, फर्श पीसते हुए, जंजीरों में, चक्की में या अपेक्षाकृत समृद्धि में, छोटे व्यवसायों में अपने दम पर काम करते हुए पाया जा सकता था।

अधिकांश मामलों में वे अपने स्वतंत्र पड़ोसियों से बहुत अलग नहीं थे, सिवाय इसके कि उनका सारा लाभ उनके स्वामियों के अधीन था। सार्वजनिक दास कुछ मामलों में महत्वपूर्ण सरकारी अधिकारी या सार्वजनिक स्नानघरों में नौकरशाह हो सकते थे। प्लिनी, एल्डर ने उस समय की गुलामी का वर्णन किया, और मैंने आपके समझने के लिए इन शब्दों को कैद कर लिया।

लेकिन आज के समय में, यह पॉल का समय है। तारीखों पर ध्यान दें। ये वही ज़मीनें हैं जहाँ गुलामों द्वारा काम किया जाता है, जिनके पैर जंजीरों में जकड़े हुए हैं, अपराधियों के हाथों से, और दागदार चेहरों वाले लोगों द्वारा।

हाल ही में एक विद्वान ने इस स्थिति का वर्णन इन शब्दों में किया। क्या यह सच है कि सभी गुलामों के साथ ऐसा दुर्व्यवहार नहीं किया जाता था। लेकिन गुलामों की पिटाई, कोड़े मारने, बेंत मारने और उन्हें फांसी पर चढ़ाने के अनगिनत, अक्सर सांस्कृतिक संदर्भ प्राचीन काल में गुलामों के अंधकारमय और निराशाजनक अस्तित्व के मुखर गवाह हैं।

शारीरिक दंड पर निर्भरता आंशिक रूप से इस तथ्य के कारण थी कि दासों के पास कोई संपत्ति नहीं थी जिसे जब्त किया जा सके या आत्मसमर्पण करने के लिए धन नहीं था। इसलिए, यह कहने के बाद, दासता, जैसा कि पॉल ने कहा है, इन शब्दों में देखा जाना चाहिए। इफिसुस जैसे औसत शहर में 30-35% आबादी दासों की होगी।

वर्सेल्स एक छोटा शहर था, लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि अनुपात के मामले में यह इतना अलग नहीं होना चाहिए। आप इस तथ्य पर भी ध्यान देना चाहेंगे कि शुरुआती ईसाइयों ने कट्टरपंथी सामाजिक सुधार करना अपनी महत्वाकांक्षा नहीं बनाई थी। इन शब्दों में इसके बारे में सोचें।

उदाहरण के लिए, यदि आपके पास 5,000 की आबादी वाला शहर है और आपके पास 100 ईसाई हैं, तो आपको क्या लगता है कि अगर वे समाज में व्याप्त गुलामी की संस्था को बदलने के लिए अभियान चलाते हैं, तो क्या होगा? क्या आपको लगता है कि वे बच जाएंगे? हम जो जानते हैं, वह यह है कि आरंभिक चर्च ने गुलामी की सामाजिक संरचना को बदलने की योजना या इरादा नहीं बनाया था। पॉल ने चेतावनी दी कि दास कैसे व्यवहार कर सकते हैं, और स्वामी इन दासों के साथ इस तरह से व्यवहार कर सकते हैं जो वास्तव में, कम से कम उस समय के लोगों के लिए, लोगों के साथ व्यवहार करने का एक अधिक मानवीय तरीका प्रतीत होगा। आप इस पाठ में यह भी देख सकते हैं कि गुलामी वास्तव में एक कर्तव्य, एक धार्मिक कर्तव्य के रूप में थी।

हाल ही में, न्यू टेस्टामेंट नैतिकता पर एक बातचीत में, यह विषय आया कि न्यू टेस्टामेंट में किन चीजों का स्पष्ट रूप से समर्थन किया गया है या मना किया गया है और आधुनिक दिनों में किन चीजों को प्रोत्साहित किया जाता है लेकिन उनका पालन नहीं किया जाता है। और विषय, विशेष रूप से, समलैंगिकता के मुद्दे से संबंधित था। जिस व्यक्ति से मैं बात कर रहा था, उसने मुझसे यह सवाल पूछने में देर नहीं लगाई कि बाइबल गुलामी के बारे में क्या कहती है और हम गुलामों की तलाश क्यों नहीं करते और गुलामों से आज्ञा मानने के लिए क्यों नहीं कहते।

मेरे पास जवाब में एक त्वरित उत्तर था और शायद यह समझ में आएगा जब आप कुलुस्सियों में संबोधित मुद्दों के बारे में सोचेंगे। सबसे पहले, हमारे समाज के ढांचे में गुलामी की संस्था नहीं है जैसा कि प्राचीन दुनिया में थी। दूसरा, हमारे समाज के कुछ हिस्सों में नीति को प्रभावित करने और गुलामी को हमारे सामाजिक ताने-बाने का हिस्सा बनाने के लिए अधिक ईसाई हैं।

तीसरा, यह कहना बिलकुल अनुचित है कि यदि बाइबल कहती है कि दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा माननी चाहिए, तो बाइबल में जो कुछ भी निंदा की गई है, उसे हमें त्याग देना चाहिए। फिर, हमें यह तय करना पड़ सकता है कि ईसाई नैतिकता क्या है और क्या नहीं। यह नैतिक मुद्दों की जटिलता को नकारता नहीं है, जिनसे हमें नियमित रूप से निपटना पड़ता है।

पॉल यहाँ यही कह रहा है। समाज में जो परम्परागत रूप से काम होता है, उसे इसी दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करना सीखना चाहिए, और उन्हें किसी भी तरह की हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

उन्हें हर बात में अपने स्वामी की आज्ञा माननी चाहिए, और उन्हें ऐसा करना चाहिए। वहाँ की भाषा पर गौर करें; उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि स्वामी उन पर दबाव डाल रहा है। उसी तरह जैसे मैंने आपको पत्नी के निर्देश, पति के निर्देश के बारे में बताया था, कि दासों को कुछ ईसाई नैतिक जिम्मेदारी लेने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। जो सही है वही करना चाहिए, न कि केवल अपने सांसारिक स्वामी को खुश करना चाहिए।

वैसे, ग्रीक में, जब वह दास के स्वामी या स्वामी के बारे में बात करता है और इस तथ्य के बारे में कि उन दोनों का स्वर्ग में एक स्वामी है, तो भाषा को देखना बहुत दिलचस्प है। और यह कैसे होता है जैसे कि यह कहना कि, आप जानते हैं कि, आप यहाँ ऊपर एक स्वामी के भण्डारी हैं जो आप पर नज़र रखता है कि आप एक दास के रूप में यह सब करते हैं, आपका स्वामी वास्तव में एक भण्डारी है जिसका एक उच्च स्वामी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह जो कर रहा है वह सही है, उस पर नज़र रखता है। इसलिए, आप सभी, कृपया अपना काम करें और जो आपको करने की ज़रूरत है उसे ज़िम्मेदारी से करें।

कुलुस्सियों के लिखे जाने तक कुलुस्सियों में कोई भी बात अपमानजनक नहीं थी। यह हमारे समय में पढ़ने के लिए उतना बढ़िया लेख नहीं हो सकता, लेकिन ध्यान दें कि दास से क्या पूछा गया है। उन्हें यह सिर्फ़ स्वामी का अनुग्रह पाने के लिए नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें यह दिल की ईमानदारी से करना चाहिए।

भगवान के प्रति श्रद्धा के साथ। भगवान के भय में, भगवान की आज्ञाकारिता में उनकी रक्षा के लिए ऐसा करना। भगवान की इच्छा के कारण, कोई ऐसा करेगा, इसलिए नहीं कि उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूरी महसूस होती है, बल्कि वे ऐसा इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि ऐसा करना सही है।

दासों का जिक्र करते हुए, आप जो भी करते हैं, उसे पूरे दिल से करें। आपको याद होगा कि मैंने चर्चा में पहले हृदय शब्द की व्याख्या की थी। यह केवल भावना के बारे में नहीं है, बल्कि आपके जीवन का केंद्र, आपकी तर्क का केंद्र, भावनाओं का स्थान, वह स्थान है जहाँ से इच्छा की जाती है।

इसलिए इसे पूरे दिल से करो, और अगर तुममें हमारा दिल नहीं है, तो अपने पूरे दिमाग और आत्मा से करो जैसे तुम इसे भगवान के लिए करते हो। ऐसा मत सोचो कि तुम यह अपने भ्रष्ट स्वामियों को खुश करने के लिए कर रहे हो।

आप भाषा को देखें, मानव स्वामियों के लिए नहीं, क्योंकि आप जानते हैं कि आपको स्वामी से विरासत मिलेगी। इस समय जो दास को अच्छे काम के लिए पुरस्कृत करेगा, वह स्वामी है।

शायद मुझे यहाँ यह कहने के लिए रुकना चाहिए कि यह सच है कि इस विशेष मार्ग का उपयोग 19वीं शताब्दी में विशेष रूप से दासों के साथ दुर्व्यवहार को सही ठहराने के लिए किया गया था।

मुझे कहना चाहिए कि आज भी दुनिया के कुछ हिस्सों में गुलामी है, और कुछ लोग इसे सही ठहराने के लिए इस तरह की परीक्षा की इच्छा रखते हैं। लेकिन हमें सावधान रहना चाहिए कि हम यह न मान लें कि पॉल यहाँ यही कर रहा है, कि पॉल इसका इस्तेमाल एक ऐसा ढाँचा बनाने और स्थापित करने के लिए कर रहा है जिसके लिए ईसाई समाज में लोगों के साथ दुर्व्यवहार करेंगे। नहीं, यहाँ उसका उद्देश्य वास्तव में घर के लोगों को एक-दूसरे के साथ शांति से रहने की सलाह देना है, एक ऐसी जगह जहाँ चर्च आकर मिलेंगे, जहाँ मसीह और ईसाई के रूप में रहना वास्तव में बाकी समाज के लिए एक अच्छे मॉडल के रूप में काम करेगा।

फिर, देखिए वह स्वामियों से क्या कहता है। स्वामियों, आप बच नहीं सकते। कोई भी स्वामी को इस बारे में बताना नहीं चाहता क्योंकि जब कोई गुलाम खरीदा जाता है, तो वह एक संपत्ति बन जाता है।

दास की एक मुख्य जिम्मेदारी होती है: स्वामी की इच्छाओं को पूरा करना। लेकिन पॉल कहते हैं, नहीं, स्वामी, आपके पास अपने दासों के लिए सही और उचित चीजें प्रदान करने की जिम्मेदारी है। दूसरे शब्दों में, ईसाई स्वामी को वास्तव में दास के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने की चुनौती दी जाती है।

और फिर वह यह भी कहेगा कि उन्हें ऐसा करना चाहिए क्योंकि वे जानते हैं कि स्वर्ग में बैठा मालिक देख रहा है कि क्या हो रहा है। इसके बारे में सोचें। यदि आपको अपने अधीनस्थ के साथ व्यवहार करना है और आप जानते हैं कि आपके पास एक निष्पक्ष और न्यायप्रिय मालिक है जो सीसीटीवी या कैमरे के माध्यम से या अपनी उपस्थिति से आपके कार्यों को देख रहा है, तो आप अपने अधीनस्थों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे? मेरे विचार से, इसका उत्तर सरल होगा।

आप जितना संभव हो उतना निष्पक्ष रहने की कोशिश करेंगे। आप जितना संभव हो उतना दयालु होने की कोशिश करेंगे। आप हर किसी से वही करवाने की कोशिश करेंगे जो सही है, यह जानते हुए कि आपके दिल से और आपके विवेक से, आप वही कर रहे हैं जो सही है, और साथ ही, अधीनस्थ भी वही कर रहा है जो सही है।

इस संदर्भ में पॉल की कल्पना करें। और इसलिए यह इस संदर्भ में है कि पॉल, अध्याय 4, श्लोक 1 में, दास स्वामी को ऐसा करने के लिए कहता है। फिर वह अध्याय 4 में इस पत्र को समाप्त करने से पहले इन शब्दों के साथ उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए आगे बढ़ेगा, जिसे मैं अगले व्याख्यान में विस्तार से बताऊंगा।

प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागते रहो। साथ ही, हमारे लिए भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमारे लिए प्रभु का द्वार खोले। ताकि मैं मसीह का रहस्य बता सकूँ, जिसके कारण मैं बन्दीगृह में हूँ, और यह स्पष्ट कर सकूँ कि मुझे किस रीति से बोलना चाहिए।

बाहरी लोगों के साथ समझदारी से पेश आएँ, अपने समय का सबसे अच्छा उपयोग करें। आपकी बातचीत हमेशा शालीन और नमकीन होनी चाहिए, ताकि जब कोई आपसे संपर्क करे तो आपको पता हो कि आपको हर व्यक्ति को कैसे जवाब देना चाहिए। अध्याय 3 पर व्याख्यान समाप्त करते हुए, मैं आपका ध्यान इस चर्चा में विकसित की गई कुछ बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

चर्च को इस पारस्परिक जिम्मेदारी और एकता की मजबूत भावना के लिए बुलाया गया है। एकता इस बात पर आधारित है कि उन्हें विश्वास के समुदाय में क्या करने की आवश्यकता है। फिर पॉल इसे पारिवारिक सेटिंग में लाता है कि कैसे व्यक्तिगत घरों में आंतरिक कामकाज व्यापक चर्च में एकता और एकजुटता को प्रभावित कर सकता है।

अगर पति-पत्नी के बीच अच्छा रिश्ता है और अगर माता-पिता और बच्चों के बीच अच्छा रिश्ता है, अगर परिवार में दास अपने मालिक के साथ शांति से रहते हैं, तो वहाँ से, जब वे सभी मिलते हैं, तो घर में विभिन्न परिवार मिलते हैं, और एकता होगी। हो सकता है कि पॉल के शब्द आप में से कुछ को इतने आकर्षक न लगें, लेकिन मैं आपको अध्याय 3 की आखिरी आयत और उसके द्वारा बताए गए मुख्य गुणों के बारे में याद दिलाना चाहता हूँ। पत्नियाँ स्वेच्छा से अपने पतियों के अधीन रहती हैं।

पतियों, अपनी पत्नियों से प्यार करो। बच्चों, अपने माता-पिता की आज्ञा मानो। पिताओं, अपने बच्चों को परेशान मत करो।

दासों, अपना काम पूरे दिल से, पूरे दिमाग से करो। जो तुम्हें करना है, उसे ऐसे करो जैसे कि तुम यह सब प्रभु के लिए कर रहे हो, जो तुम्हें इनाम देगा। बिना किसी हिचकिचाहट के करो।

और स्वामियों, जान लो कि तुम अपने दासों के साथ जो भी व्यवहार करते हो, तुम्हारा स्वर्गीय स्वामी उसे देख रहा है। वह उचित रूप से पुरस्कृत करेगा, और वह हम सभी को जवाबदेह होने के लिए कहता है। जैसा कि आप देखते हैं कि पौलुस ने इसे कैसे विकसित किया, उसने झूठी शिक्षा के प्रभाव के खिलाफ एक मजबूत कुशन बनाया है और चर्च में एक बहुत मजबूत संबंध निर्माण उद्यम की ओर बढ़ गया है जहाँ लोग वही करेंगे जो परमेश्वर उनसे करना चाहता है।

और जब वह ऐसा करता है, तो ध्यान दें कि बार-बार क्या बात सामने आती रहती है। मसीह केंद्र हो। प्रभु केंद्र हो।

यह प्रभु के लिए उचित होना चाहिए। और वैसे, इन सभी चीजों की देखरेख एक स्वामी द्वारा की जा रही है। और जब हम सभी ऐसा करेंगे और जीवन जीएंगे, तो अंत में, परमेश्वर की महिमा होगी।

चर्च समाज के लिए एक उदाहरण होगा। और जैसा कि हम अगले व्याख्यान में देखेंगे, यह वास्तव में चर्च को बाहरी दुनिया के लिए एक सकारात्मक गवाह बनने में मदद करेगा। इस तरह, कुछ लोग आएंगे और कुछ सवाल भी पूछेंगे।

और वे उन्हें अच्छे उत्तर देने में सक्षम होंगे। उनका जीवन ही दिखाएगा कि, वास्तव में, वे एक अच्छा जीवन जी रहे हैं। वे हर उस समय का लाभ उठाएँगे जो परमेश्वर उन्हें देता है।

अंत में, चर्च दुनिया में वह प्रकाश होगा जिसे हम अध्याय एक से जानते हैं, जिसे अंधकार के संदर्भ में वर्णित किया गया है। इस व्याख्यान में आगे बढ़ने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। और मुझे उम्मीद है कि जैसे-जैसे हम साथ मिलकर सीखेंगे, आप भी वैसे-वैसे बढ़ेंगे जैसे हम बढ़ रहे हैं।

और मुझे उम्मीद है कि जब आप इस बारे में सोचेंगे तो कुलुस्सियों की किताब आपकी पसंदीदा किताबों में से एक बन जाएगी। क्या मैं आपको होमवर्क के लिए कुछ सुझाव दे सकता हूँ? क्या आप अभी बैठ सकते हैं और आराम कर सकते हैं? अपनी बाइबल उठाएँ और कुलुस्सियों के अध्याय एक, अध्याय दो और अध्याय तीन को पढ़ना शुरू करें। और देखना शुरू करें कि यह किताब कैसी दिखती है।

क्योंकि जैसे-जैसे हम समापन की ओर बढ़ते हैं, यह सब आपके दिमाग में एक साथ लाने में मदद करता है। और यह देखना शुरू करें कि पौलुस चर्च को क्या संदेश दे रहा है, जो घुसपैठ, झूठी शिक्षा और झूठे शिक्षकों के खतरे में था। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, और मैं इस बाइबिल अध्ययन श्रृंखला में एक साथ एक अद्भुत अध्ययन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

धन्यवाद।

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में बोल रहे हैं। यह सत्र 6 है, चर्च में एकता, कुलुस्सियों 3।